महात्मा गांधी के आर्थिक विचारोंकी प्रासंगिकता

डॉ. आरती डी. महेशकर
सहा.प्राध्यापक
भगवंतराव कला महाविद्यालय,
सिरोंचा जि. गडचिरोली
Email-maheshkararti@gmail.com

सारांश :

महात्मा गांधी अर्थव्यवस्था का ऐसा मॉडल चाहते थे जिसमे गॉव गॉव तक उद्योग हो, अमीर गरीब के बीच की असमानता खत्म हो और हर एक व्यक्ती के पास रोजगार हो। गांधीजी के आर्थिक विचार अहिंसात्मक मानवीय समाज की अवधारणा से ओतप्रोत है। उनके आर्थिक विचार अध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहीत करनेवाले एवं भौतिकवाद के विरोधी थे।गांधीजीमानवकीआवश्यकता के अनूसार अर्थशास्त्र का प्रयोग करने की सलाह देते थे। उनके जीवन मे फॅशन तथा भौतिकवादी या विलासतापूर्ण जीवन यापन के लिए कोई स्थान नहीं था। गांधीजी का अर्थशास्त्र एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने की बात करता है, जिसमे एक व्यक्ती किसी दुसरे का शोषण नही करता। अर्थात गांधीवादी अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय और समता के सिध्दांत पर आधारीत है।

ग्रामस्वराज्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था लघु व कुटीर उद्योग, विकेंद्रीकरण की अवधारणा आदि सभी आर्थिक घटकों में उनके द्वारा प्रस्तुत कियेगए। आर्थिक दृष्टीकोन न केवल प्राचीन भारत बल्कि वर्तमान भारत के संदर्भ मे भी सही साबीत होते है।

खोजशब्द :- स्वदेशी,ग्रामस्वराज्य,आत्मनिर्भर,कुटीर व लघु उद्योग

प्रस्तावणा :

महात्मा गांधी एक अध्यात्मिक पुरूष थे उन्होने अध्यात्म मे जिस गॉव की संरचना देखी थी वह रामराज्य से प्रेरित थी। इसमे गॉवो को लोकतांत्रिक रूप से चलाया जाता था। जहॉ शासक लोगों के हित के लिए काम करता था। सभी को समान अवसर प्रदान किए जाने थे। हिंसा की कोई जगह नहीं थी और जहॉ सभी धर्म और मान्यताओं का आदर किया जाता था। गांधीजी मानव की आवश्यकता के अनूसार अर्थशास्त्र का प्रयोग करने की सलाह देते थे। उनके जीवन मे फॅशन तथा भौतिकवादी या विलासतापूर्ण जीवन यापन के लिए कोई स्थान नहीं था।गांधीजी मानते थे कि ''प्रकृती हर व्यक्ती की जरूरत को पूरा कर सकती है, लेकीन वह किसी के लालच को कभी पूरा नहीं कर सकती है''। उनका मानना था कि मानव को अपनी आवश्यकताओं के अनूसार प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करना चाहीए। जिससे आवश्यकता और उपयोग के बीच संतुलन बना रहे।

गांधीजी का आर्थिक दर्शन हमें उस समय की स्थिती का वर्णन कराता है जब भारत देश अंग्रेजों का गुलाम था और भारत देश गरिबी, भुखमरी, बेरोजगारी जैसे समस्याओं मे जकडा हुआ था। इसिलिए उनके आर्थिक विचारों में न केवल ग्रामस्वराज्य, स्वदेशी कुटीर व पारंपारीक उद्योग विकेंद्रीकरण जैसे आर्थिक घटकों का समावेश मिलता है बल्कि संरक्षणवाद तथा राष्ट्रवादी भावना के लक्षण दिखायी देते है। जो उनके द्वारा दिया गया सिध्दांत अहिंसा पर आधारीत थे **गांधीजी के आर्थिक विचार निम्नलिखीत आर्थिक घटकों पर आधारीत है।**

१) स्वदेशी :-

गांधीजी द्वारा उपयोग की गयी स्वदेशी सबंधीत अवधारणा का विश्लेषण करे तो हमें एक अभिनव बात प्राप्त होती है और वह है भारत देश की पारतंत्रता से आझादी कराने के लिए उन्होने स्वदेशी शब्द का प्रयोग किया था। सत्य और अहिंसा के सिध्दांतो द्वारा विदेशी कपडों का बहिष्कार करना प्रारंभ कर दिया था और देशवाासियों को सलाह दी थी की, विदेशी कपडों के स्थान पर हम अपनेही देश मे बने हुए कपडों का प्रयोग करेंगे इसके लिए उन्होने सर्वप्रथम चरखे

के माध्यम से सूत काटने की सलाह दी थी। स्वदेशी के सामाजिक पहलू पर जोर देते हुए गांधीजी ने देश भर मे खादी को अपनाने का प्रचार किया। उनका कहना था स्वदेशी व्रत का अर्थ है, की हम इस घोर पाप का प्रायश्चित करना चाहते है और जो करोंडो रूपया भारत से बाहर चला जाता है, इसको हम बचाना चाहते है और इसका प्रयोग देश के विकास में किया जाए।

गांधीजी के आर्थिक दृष्टी से स्वदेशी का मतलब है देश की कंपनियो और कारखानो को मजबूत किया जाए। इसी सोच के तहत विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई और गांधीजीने खादी और ग्रामउद्योग को बढावा दिया उनका मानना था कि खादी भारतवासियों की एकता, उनकी आर्थिक स्वाधीनता और समानता का प्रतिक बन सकती है।मौजुदा शासकों द्वारा 'मेक इन इंडिया' पर जोर देना इसी सोच का ही एक स्वरूप है।

२) ग्रामस्वराज्य :-

गांधीजी एक अध्यात्मिक पुरूष थे उन्होने अध्यात्म में जिस गॉव की संरचना देखी थी वह रामराज्य से प्ररित थी । जिसमें गॉवो को लोकतांत्रिक रूप से चलाया जाता था। जहॉ शासक लोगों के हित के लिए काम करता था,सभी को समान अवसर प्रदान किए जाते थे। गांधीजी का कहना था कि सच्चा भारत ग्रामों मे निवास करता है और जब तक हम ग्रामों का विकास नहीं करेंगे तब तक देश का विकास अधूरा है। इसलिए उन्होंने ग्राम स्वराज्य की बात पर जोर दिया था । उन्होंने कहा कि एक आदर्श ग्राम होगा जिसमें एक पाठशाला, औषधालय, शौचालय, सामुदायिक सभागृह होगा जिसमें लोक एकत्रीत होकर ग्राम की समस्याओं पर विचार विमर्श करेंगे, बच्चों के लिए उचित खेल का मैदार, अच्छे व पर्याप्त परिवहन साधन, ग्राम की साफसुथरी सडकें होगी। गांधीजी इन सब सुविधाओं के द्वारा ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे ताकि ग्राम किसी अन्य शहरों पर निर्भर नहीं रहें।

गांधीजी के स्वराज्य का मतलब है, कि आत्मनर्भरता स्वराज्य से एक तरह की गयी विकेंद्रीत अर्थव्यवस्था है । गांधीजी ने ऐसी अर्थव्यवस्था को बेहतर समझा जिसमे मजदूर स्वयं अपना मालिक हो । उनका मानना था कि इससे लोग प्रत्येक राज्य सत्ता से स्वतंत्र होकर अपने जीवन पर नियंत्रण कर सकेंगे, साथ ही गॉव और ग्राम सभाएं आत्मनिर्भर और स्वावलंबी हो सकेंगी।

गांधीजी के ग्रम से सबंधित विचारों को जब हम वर्तमान के संदर्भ में देखते हैं तो हमें यह पता चलता हैं, कि आज ग्रामों का जो पंचायती राज दिखाई दे रहा है वह उन्ही के विचारों की देन है।

३) लघु व कुटीर उद्योगों का समर्थन :-

गांधीजी के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कुटीर उद्योग है। उनका विश्वास था कि भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले और गरीब देशों के लिए मशीनों का प्रयोग लाभप्रद नहीं हैं। उन्होंने श्रम को महत्व देते हुए कहा था, कि देश में पर्याप्त मात्रा में मानव संसाधन, श्रम उपलब्ध होने के कारण हमें ऐसी अर्थव्यवस्था का पालन करना चाहीए जिसमें अधिक से अधिक श्रम का प्रयोग हो और वह तथी संभव है जब हम श्रम गहन प्राद्योगिकी को अपनाएंगे।

गांधीजी अपनी आदर्श ग्राम परिकल्पना के अंतर्गत यह महसुस करते थे, कि भारत को आत्मनिर्भर बनाना है और गॉवों में स्वावलंबन कि भावना विकसीत करनी है, तो ग्रामीण क्षेत्रों में लघु व कुटीर उद्योग स्थापित होना चाहीए। क्योंकी ये ऐसे उद्यम है जिसके लिए बहुत कम पूंजी की आवश्यकता होगी, और ग्राम का प्रत्येक परिवार इन व्यवसायों में संलग्न होकर, आसानी से अपनी समस्याओं का समाधान करने के साथ साथ जीविकोपार्जन कर सकता है। गांधीजी के लघु और कुटीर उद्यमों के क्षेत्र में खादी को भी एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में प्रस्तुत किया था ।क्योंकी वे मानते थे कि यदि हम विदेशी कपडों और परिधानों का प्रयोग करते है, तो ब्रिटीश शासन को समाप्त करना संभव नहीं है। इसिलिए हमें चरखों के माध्यम से सूत बनाकर कपडों का उपयोग करना चाहीए। इस हेतू गांधीजी ने खादी के लिए अपना आंदोलन प्रारंभ किया था। गांधीजी का मानना था कि भारत की तेजी से बढती हुई जनसंख्या, बेरोजगारी की समस्या को उत्पन्न कर सकती है और यदि हमें इस समस्या का समाधान करना है, तो लघु और कुटीर उद्योगों को महत्व देना होंगा क्योंकी ये उद्योग मशिन की स्थान पर श्रमों को अधिक महत्व देते है। जो बरोजगारी की समस्या के लिए एक उत्तम पहल कही जा सकती है।

आज संपूर्ण विश्व जनसंख्या में वृध्दी के कारण बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहा है। उसका केवल एक ही कारण है वह है तकनीकी विकास। वास्तव में हमनें इस तकनीकी और आधुनिक युग की दौड में गांधीजी के विचारों को भूला दिया। जिसका परिणाम आज हमारे सामने एक विकराल बेरोजगारी समस्या के रूप में खडी है। यदि हमें इन समस्याओं का समाधान खोजना है तो केवल महात्मा गांधीजी के लघु एवं कुटीर उद्योगों सबंधी अवधारणा में ही दिखाई देगा ।

४) ट्रस्टशिप का सिध्दांत :-

गांधीजी के ट्रस्टशिप सिध्दांत का मूलतत्व है, कि समस्त सम्पत्ती समाज की है और धनी वर्ग इस धन के प्रति स्वयं को केवल एक ट्रस्टी माने। जैसे एक ट्रस्टी ट्रस्ट की संपत्ती की देखभाल करता है,उसी प्रकार धनी वर्ग जिसके पास आर्थिक उत्पादन के साधन है।वो इनका प्रयोग इस प्रकार करे जिसमें समाज का लाभ हो और जनकल्याण बढ सके। उनका मानना था कि समाज में आर्थिक समानता लाने के लिए पूंजीपतियो एवं जमीनदारों के पास जो अनावश्यक धन, भूमी है उसको उनसे प्राप्त कर उन्हे सामाजिक संरक्षण नियुक्ती कर दिया जाए। तथा इसका उपयोग वो लोग करे, जो निर्धन है। यह संपत्ती प्राप्त करने के साधन साम्यवाद पर आधारित न होकर सत्य व अहिंसा पर आधारित होंगे।

उनका विश्वास था कि ट्रस्टशिप का यह सिध्दांत पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को समाजवादी अर्थव्यवस्था में स्वतः परिवर्तीत कर सकता है। इससे लोगों को न्युनतम जीवन सार का निर्धारण भी किया जा सकता है, और इससे समाज में आर्थिक समानता आ सकती है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि धनी वर्ग को अपने धन का उपयोग समाज के कल्याण हेतू करना चाहीए। वह आर्थिक समानता की स्थायी स्थिरता के माध्यम से हिंसक एवं रक्त क्रांती को रोकना चाहते थे।

कार्ल-मॉर्क्स ने श्रमिकों का शोषण समाप्त करने के लिए पूंजीवादी प्रणाली को जड से उखाड फेकने की बात की है, जबकी गांधीजी अपने प्रिय सिध्दांत सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से श्रमिकों की समस्याओं को हल करने का प्रयास करते है।

५) निष्कर्ष :-

महात्मा गांधी अर्थशास्त्री नहीं थें। उन्होंने कभी गहराई से अर्थव्यवस्था और उसको प्रभावित करनेवाले कारकों का अध्ययन नहीं किया। फिर भी सत्य, अहिंसा, यांत्रिकीकरण, धर्म, राजकारण, समाजकारण इत्यादी संदर्भ में जो भी आर्थिक विचार बिखरे हुए है वो उनके अनुयायी द्वारा, अभ्यासकोंद्वारा एकत्रित किए गए 'गांधीवादी अर्थशास्त्र' शब्द गांधीजी के मित्र और समर्थक जे.सी. कुमारअप्पा द्वारा दिया गया था।

गांधीजी द्वारा प्रस्तृत किए गए आर्थिक दृष्टीकोन ग्रामस्वराज्य, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, लघु और कुटीर उद्योग, विकेंद्रीकरण की अवधारणा आदी सभी आर्थिक घटकों में समाविष्ठ है। उनके द्वारा प्रस्तृत किए गए आर्थिक दृष्टीकोन न केवल प्राचीन भारत बल्कि वर्तमान भारत के संदर्भ में भी सही साबीत होते है।

गांधीजी ने जहाँ एक तरफ देश के ग्रामीण क्षेत्रों को अहम बताते हुए ग्राम स्वराज्य का उल्लेख किया है जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढता प्रदान करने हेतू लघु और कुटीर उद्योंगों पर दृष्टी डाली है वही दुसरी तरफ स्वदेशी शब्द का उपयोग करके एक राष्ट्रवादी भावना प्रस्तृत की है।

सदंर्भ सूची :-

- आर्थिकी, आर्थिक शोध पत्रिका, वाराणसी, वर्ष ४४, अंक-१, जून २०१२.
- गांधी मोहनदास करमचंद : हिन्द स्वराज्य, सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी २०१३.
- कुमार आप्पा - डॉ. जे.सी. ग्रामद्योगाचे अर्थशास्त्र अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ, वर्धा.
- कुलकर्णी बी.डी. ढमढेरे एस.व्ही., आर्थिक विचार व विचारवंत, डायमंड पब्लिकेशन, पुणे, २००८.
- गांधीवादाची प्रासांगिकता, प्रकाशित लेख, दै. देशोन्नती (अकोला पूरवणी) २८ ऑक्टोबर २००८.
- Economic ideas of Mahatma Gandhi issue and challenges (www.mkghandhi.org) by Suresh Maind.